ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in November 2025

भारत–अमेरिका संबंधः बहुपक्षीय मंचों पर रणनीतिक समन्वय और वैश्विक प्रभाव

कु॰ गुड़िया सिंह, शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
डॉ. समरेंद्र बहादुर शर्मा, आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, बी.आर.डी.पी.जी.कॉलेज, देवरिया

सारांश

भारत और अमेरिका के बीच संबंध 21वीं सदी में अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के सबसे महत्वपूर्ण द्विपक्षीय सहयोगों में से एक बन चुके हैं। शीत युद्ध के बाद दोनों देशों ने अपनी रणनीतिक प्राथमिकताओं में लचीलापन दिखाया, जिसके फलस्वरूप अब वे संयुक्त राष्ट्र, G20, क्वाड और इंडो–पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क जैसे बहुपक्षीय मंचों पर मिलकर कार्य कर रहे हैं। दोनों देशों की साझेदारी लोकतांत्रिक मूल्यों, कानून के शासन, मानवाधिकारों और बहुलवाद को मजबूती प्रदान कर रही है। वर्ष 2025 की यूएस–इंडिया कॉम्पैक्ट पहल के तहत रक्षा, व्यापार, तकनीक, ऊर्जा व अंतरिक्ष सहयोग जैसे क्षेत्रों में साझा कार्ययोजना तैयार की जा रही है, जिसमें व्यापार को $500 बिलियन तक बढ़ाने संयुक्त रक्षा औद्योगिक सेट अपव कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे तकनीकी क्षेत्रों में मिलकर काम करने का रोडमैप तैयार हुआ है। क्वाड और IPEF के माध्यम से भारत–अमेरिका की भागीदारी इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में नियम–आधारित व्यवस्था को बढ़ावा दे रही है। ताकि क्षेत्र में स्थिरता और सुरक्षा बनी रहे। दोनों देशों ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला विविधीकरण उच्च–प्रौद्योगिकी सहयोग और जलवायु परिवर्तन पर भी साझा दृष्टिकोण अपनाया है। इस साझेदारी ने साइबर सुरक्षा, डिजिटल कनेक्टिविटी तथा उभरती प्रौद्योगिकियों में मानक निर्धारण जैसे क्षेत्रों में भी नई संभावनाएं खोली हैं। जिससे व्यापक भू–राजनीतिक और आर्थिक सहयोग मजबूत होता है। यथार्थवाद और नव–उदार संस्थागतवाद के सैद्धांतिक फ्रेमवर्क में यह स्पष्ट है कि भारत की रणनीतिक स्वतंत्रता और अमेरिका की वैश्विक नेतृत्वकारी भूमिका एक–दूसरे में पूरक सिद्ध हो रही है। भारत–अमेरिका बहुपक्षीय रणनीतिक समन्वय से वैश्विक व्यवस्था में शक्ति–संतुलन आर्थिक समावेशन और लोकतांत्रिक सहयोग की नई प्राथमिकाएं स्थापित हो रही हैं।

मुख्य शब्दः भारत–अमेरिका संबंध, बहुपक्षीय मंच, रणनीतिक समन्वय, क्वाड, G20, वैश्विक शासन

प्रस्तावना :

भारत और अमेरिका के बीच संबंध 21वीं सदी में वैश्विक राजनीति, सुरक्षा और आर्थिक सहयोग के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण और गहरे द्विपक्षीय संबंधों में से एक बन गए हैं। ये संबंध पारंपरिक कूटनीतिक और आर्थिक सहयोग से आगे बढ़कर बहुपक्षीय मंचों जैसे संयुक्त राष्ट्र, G20, क्वाड, इंडो–पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क आदि में रणनीतिक समन्वय के जरिए वैश्विक स्थिरता और सुरक्षा को बहुआयामी रूप से सुदृढ़ कर रहे हैं। शीत युद्ध के बाद से दोनों देशों ने विभिन्न वैश्विक और क्षेत्रीय चुनौतियों जैसे आतंकवाद जलवायु परिवर्तन, साइबर सुरक्षा, और आर्थिक अस्थिरता का सामना करने के लिए एकजुट होकर काम किया है।संयुक्त राष्ट्र जैसे बहुपक्षीय मंचों पर भारत और अमेरिका न केवल वैश्विक शांति और सुरक्षा, बल्कि मानवाधिकार, लोकतंत्र और अंतर्राष्ट्रीय कानून के शासन के समर्थन में भी सहयोग करते हैं। क्वाड के माध्यम से वे हिंद–प्रशांत क्षेत्र में सामरिक संतुलन और समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक साझा मंच प्रदान करते हैं। G20 और IPEF जैसे आर्थिक और राजनीतिक मंचों पर दोनों देश वैश्विक आर्थिक पुनरुद्धार, व्यापार नीतियों और सतत विकास के लिए महत्वपूर्ण पहल करते हैं। इसके अतिरिक्त डिजिटल अर्थव्यवस्था, अंतरिक्ष सहयोग, 5G और 6G जैसी उभरती प्रौद्योगिकी में मानक निर्धारण तथा महत्वपूर्ण एवं उभरती तकनीकों के विकास में भी दोनों देशों का सहयोग तेज़ी से बढ़ रहा है। यह सहभागिता वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के पुनर्गठन और आपूर्ति श्रृंखला की मजबूती में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इस सहयोग की एक प्रमुख विशेषता यह है कि भारत अपनी रणनीतिक स्वतंत्रता बनाए रखते हुए अमेरिका के साथ गंभीर राजनीतिक एवं सैन्य साझेदारी में सम्मिलित होता है। अमेरिका ने भारत को प्रमुख रक्षा साझेदार के रूप में मान्यता दी है। जिससे दोनों देश रक्षा तकनीक सैन्य अभ्यास और खुफिया साझाकरण में गहरी भागीदारी कर रहे हैं। इसके अलावा तकनीकी नवाचार, स्वच्छ ऊर्जा, स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में भी व्यापक सहयोग हो रहा है। इस प्रकार बहुपक्षीय मंचों पर भारत–अमेरिका का रणनीतिक समन्वय वैश्विक प्रभाव को नए आयाम दे रहा है। यह सिर्फ द्विपक्षीय संबंधों का विस्तार नहीं है। बल्कि वैश्विक राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक स्थिरता सुनिश्चित करने का एक साझा प्रयास है। आने वाले दशकों में यह साझेदारी वैश्विक शक्ति संतुलन, आर्थिक विकास तथा लोकतांत्रिक मूल्यों की सुरक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। भारत और अमेरिका की यह रणनीतिक साझेदारी विश्व राजनीति में स्थिरता सहयोग और समृद्धि के नए युग की दिशा में अग्रसर है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

भारत–अमेरिका संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में शीत युद्ध के दौरान भारत की गुटनिरपेक्ष नीति 1990 के दशक में हुए आर्थिक सुधार इसके बाद रणनीतिक साझेदारी का विकास और हाल के वर्षों में बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग प्रमुख हैं। शीत युद्ध के दौर में भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई, जिसके तहत उसने किसी भी वैश्विक महाशक्ति गुट में शामिल होने से बचाव किया। इस समय अमेरिका और भारत के संबंध तनावपूर्ण थे क्योंकि अमेरिका पाकिस्तानी समर्थन के चलते भारत से दूरी बनाए रखता था। भारत की यह नीति उसके क्षेत्रीय और वैश्विक सहयोगों पर अंकुश लगाने वाली भी साबित हुई। 1990 के दशक में भारत ने अपनी अर्थव्यवस्था का उदारीकरण किया जिसने न केवल देश को वैश्विक आर्थिक प्रणाली से जोड़ा, बल्कि उसके अमेरिका के साथ व्यापार और निवेश के संबंधों को भी मजबूत किया। 1998 में भारत के परमाणु परीक्षण ने एक बार फिर अमेरिका के साथ संबंधों में चुनौतियां पैदा कीं, हालांकि बाद में दोनों देशों ने आपसी समझ और सहयोग को बढ़ावा दिया। 21वीं सदी में भारत–अमेरिका संबंधों ने नई दिशा ली। रक्षा, प्रौद्योगिकी, ऊर्जा और आतंकवाद विरोधी सहयोग के क्षेत्र में यह साझेदारी गहरी हुई। दोनों देशों ने विपरीत सामरिक हितों के बीच भी रणनीतिक संवाद और सहयोग जारी रखा। वर्तमान में भारत और अमेरिका क्वाड, I2U2, G20, और संयुक्त राष्ट्र जैसे बहुपक्षीय मंचों पर मिलकर कार्य करते हैं। खासकर हिंद–प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा वैश्विक आर्थिक स्थिरता और जलवायु परिवर्तन के मुद्दों पर। ये मंच दोनों देशों के साझा लोकतांत्रिक मूल्यों और वैश्विक चुनौतियों के समाधान में सहयोग को दर्शाते हैं। हालांकि व्यापार, वीजा नीति, और भारत के रूस के साथ रक्षा संबंधों पर मतभेद मौजूद हैं, फिर भी दोनों देशों का व्यापक रणनीतिक साझेदारी की दिशा में बढ़ता हुआ सहयोग वैश्विक राजनीति में उनकी भूमिका को निर्णायक बना रहा है। यह साझेदारी न केवल क्षेत्रीय स्थिरता, बल्कि वैश्विक शासन और आर्थिक विकास में भी सहयोग की मजबूत नींव रखती है। आने वाले वर्षों में यह साझेदारी और अधिक व्यापक रूप से विकसित होने की संभावनाएं रखती है।

बहुपक्षीय मंचों पर सहयोगः–

भारत–अमेरिका के संबंध लगभग 200 वर्षों से चले आ रहे हैं, लेकिन आधिकारिक राजनैतिक संबंध 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद स्थापित हुए। स्वतंत्रता के बाद भारत ने गुट निरपेक्ष नीति अपनाई है। जिससे शीत युद्ध के दौरान अमेरिका–पाकिस्तान के गठबंधन के कारण संबंध तनावपूर्ण रहे। 1974 में भारत के परमाणु परीक्षण ने भी मतभेद बढ़ाए। 1980–90 के दशक में शीत युद्ध के समाप्ति और भारत के आर्थिक सुधारों के बाद दोनों देशों के संबंध सुधरे। 2005 में हुए असैन्य परमाणु समझौते के बाद रक्षा प्रौद्योगिकी और आर्थिक सहयोग में तेजी आई। 2010 से रणनीतिक साझेदारी मजबूत हुई। जिसमें क्वाड और सैन्य अभ्यास शामिल हैं। 2020 के दशक में जलवायु परिवर्तन, साइबर सुरक्षा और वैश्विक पहलों में सहयोग बढ़ा है। भविष्य में यह साझेदारी वैश्विक सुरक्षा, आर्थिक विकास और तकनीकी संयोजन पर आधारित दीर्घकालिक बनी रहने की उम्मीद है। G20 के संदर्भ में, भारत और अमेरिका के संबंध मजबूत और गतिशील हैं। 2023 में भारत की G20 अध्यक्षता के दौरान दोनों देशों ने वैश्विक आर्थिक, सुरक्षा, जलवायु और विकास जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर सहयोग बढ़ाया। दोनों देशों ने कोविड–19 महामारी और यूक्रेन संकट जैसे वैश्विक आपदाओं में भी साथ काम किया। भविष्य में दोनों देश इंडो–पैसिफिक सुरक्षा, स्वच्छ ऊर्जा, और भारत की वैश्विक भूमिका को मजबूत करने पर विशेष ध्यान देंगे। अमेरिका भारत की संयुक्त रक्षा परिषद स्थायी सदस्यता का समर्थन करता है और समुद्री सुरक्षा एवं आर्थिक समृद्धि के लिए सहयोग को और बढ़ाएगा। QUAD संगठन अमेरिका, भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया का बहुपक्षीय सामरिक मंच है, जिसका उद्देश्य हिंद–प्रशांत क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है। यह संगठन 2007 में स्थापित हुआ और 2017 से पुनः सक्रिय हुआ। इसका प्रमुख लक्ष्य चीन के बढ़ते प्रभाव को रोकना और लोकतांत्रिक मूल्य प्रणालियों की रक्षा करना है। भारत और अमेरिका दोनों क्वाडके प्रमुख सदस्य हैं। जो समुद्री सुरक्षा आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई और क्षेत्रीय स्थिरता के लिए मिलकर काम करते हैं। अमेरिका रणनीतिक और तकनीकी सहायता प्रदान करता है। जबकि भारत क्षेत्रीय मुद्दों पर सक्रिय भूमिका निभाता है। भारत 2025 में QUAD शिखर सम्मेलन की मेजबानी कर रहा है, हालांकि वर्तमान आंतरिक और व्यापारिक तनाव के चलते इसके आयोजन में देरी हो सकती है। क्वाड क्षेत्रीय संतुलन और सहयोग को मजबूती प्रदान करता है।

रणनीतिक और रक्षा सहयोग :–

उच्चस्तरीय समझौते भारत–अमेरिका ने रक्षा, ऊर्जा, प्रौद्योगिकी और वाणिज्य के क्षेत्रों में कई समझौते

किए हैं। 2025 में एक नए 10–वर्षीय रक्षा रूपरेखा पर सहमति हुई है। जो रक्षा उत्पादन और तकनीकी साझेदारी को बढ़ावा देगी। साथ ही अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, विज्ञान एवं नवाचार में भी सहयोग गहरा हुआ है। दोनों देशों ने संयुक्त सैन्य अभ्यास और ऊर्जा व्यापार को भी मजबूत किया है। इन आधारों पर वैश्विक सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता को बल मिला है। इन चार महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भारत और अमेरिका की साझेदारी भविष्य में पर्यावरणीय, आर्थिक, सुरक्षा और तकनीकी क्षेत्रों को नए आयाम देने वाली है, जो वैश्विक शांति और समृद्धि में योगदान करेगी। नीचे इन उच्चस्तरीय समझौतों का विवरण है।

GSOMIA (जनरल सिक्योरिटी ऑफ़ मिलिट्री इन्फॉर्मेशन एग्रीमेंट, 2002)

भारत और अमेरिका के बीच 2002 में संपन्न यह समझौता रक्षा क्षेत्र में संवेदनशील सूचनाओं के सुरक्षित आदान–प्रदान के लिए एक औपचारिक रूपरेखा प्रस्तुत करता है। इसके माध्यम से दोनों देशों की सेनाएं एक–दूसरे के साथ सुरक्षित कार्य विधि और तकनीकी जानकारी साझा कर सकती हैं। जीसोमिया ने बाद में तीन अन्य रक्षा समझौतों की नींव रखी, जो द्विपक्षीय रक्षा सहयोग को संस्थागत स्वरूप प्रदान करते हैं। यह समझौता विशेष रूप से उस समय महत्वपूर्ण था जब भारत वैश्विक आतंकवाद, सीमा पार सुरक्षा चुनौतियों और बदलते क्षेत्रीय शक्ति–संतुलन से जूझ रहा था। जीसोमिया ने दोनों देशों के बीच रक्षा क्षेत्र में विश्वास निर्माण की प्रक्रिया को तेज किया और पारदर्शिता बढ़ाई। इस समझौते ने भारत को अमेरिकी रक्षा मानकों सुरक्षा प्रोटोकॉल और सूचना सुरक्षा तकनीकों को अपनाने का अवसर दिया, जिससे सहयोग अधिक पेशेवर और संगठित बना। जीसोमिया के बाद भारत अमेरिका के साथ संयुक्त खुफिया विश्लेषण, उन्नत सैन्य तकनीक और आतंकवाद विरोधी अभियानों में भी अधिक प्रभावी रूप से जुड़ सकाहै।

LEMOA (लॉजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ़ एग्रीमेंट, 2016)

यह समझौता भारत–अमेरिका सैन्य सहयोग में रसद सहायता के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण प्रगति थी। इसके अंतर्गत दोनों देश एक–दूसरे की सैन्य सुविधाओं जैसे ईंधन, मरम्मत, भोजन और अन्य आवश्यक संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं। यह समझौता संयुक्त सैन्य अभ्यासों और मानवीय सहायता अभियानों को अधिक सहज बनाता है, हालांकि इसका उपयोग केवल परस्पर सहमति से ही संभव है। LEMOA की विशेषता यह है कि यह आपसी सैन्य पहुँच को औपचारिक बनाते हुए रणनीतिक सहयोग की गहराई को प्रदर्शित करता है। हिंद–प्रशांत क्षेत्र में बढ़ती सामरिक प्रतिस्पर्धा और समुद्री मार्गों की सुरक्षा के संदर्भ में यह समझौता भारत के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुआ। यह आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने नौसैनिक अभियान की दक्षता बढ़ाने और प्राकृतिक आपदाओं में त्वरित राहत पहुँचाने की प्रक्रियाओं को सरल बनाता है। LEMOA के माध्यम से भारतीय नौसेना अमेरिकी ठिकानों का उपयोग करते हुए लंबी दूरी के अभियानों में अपनी पहुंच और प्रभावशीलता बढ़ा सकती है। इससे दोनों देशों की सेनाओं के बीच आपसी समन्वय, इंटरऑपरेबिलिटी और भरोसा और अधिक मजबूत हुआ है।

COMCASA (कम्युनिकेशन कम्पैटिबिलिटी एंड सिक्योरिटी एग्रीमेंट, 2018)

कोमकासा समझौता दोनों देशों की सेनाओं के बीच सुरक्षित और संगठित संचार तंत्र स्थापित करने के लिए किया गया है। इस समझौते से भारत को अमेरिकी अत्याधुनिक सैन्य उपकरणों का उपयोग करने और वास्तविक समय में जानकारी साझा करने का लाभ प्राप्त हुआ। यह भारत–अमेरिका के बीच संचार साझेदारी को मजबूत करता है और रक्षा क्षेत्र में तकनीकी सहयोग को गहरा बनाता है। कोमकासा के लागू होने के बाद भारत को अमेरिकी सुरक्षित नेटवर्क, उन्नत एन्क्रिप्टेड सिस्टम और उच्च–स्तरीय निगरानी उपकरणों तक पहुँच मिली है। यह समझौता भारत के विमानों, ड्रोन, नौसेना जहाजों और अन्य प्लेटफॉर्म में अत्याधुनिक संचार उपकरणों के एकीकरण की अनुमति देता है, जिससे ऑपरेशनल क्षमता कई गुना बढ़ती है। हिंद–प्रशांत क्षेत्र में बढ़ती सुरक्षा चुनौतियों और समुद्री निगरानी की आवश्यकता को देखते हुए कोमकासा भारत के सामरिक हितों को मजबूत करता है। यह भारत को रीयल–टाइम इंटेलिजेंस, टार्गेटिंग डेटा और स्थिति जागरूकता प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। जिससे रक्षा संचालन अधिक सटीक और प्रभावी हो जाते हैं।

BECA (बेसिक एक्सचेंज एंड कोऑपरेशन एग्रीमेंट फॉर जीयोस्पैशल कोऑपरेशन, 2020)

बेका समझौता दोनों देशों के बीच भू–स्थानिक डेटा के आदान–प्रदान को लेकर है। इसके तहत भारत को अमेरिकी उपग्रहों से प्राप्त सटीक भौगोलिक, नेविगेशन और लक्ष्य निर्धारण संबंधी जानकारी प्राप्त होती है। यह समझौता भारत की मिसाइल लक्ष्य साधन क्षमता और सैन्य अभियानों की सटीकता को काफी बढ़ाता है। बेकाके जरिए भारत अमेरिकी भू–स्थानिक तकनीक से लाभान्वित हुआ, जिससे उसकी रक्षा क्षेत्र में तकनीकी स्वायत्तता मजबूत हुई। बेकासे भारत को उच्च–रिज़ॉल्यूशन सैटेलाइट मैपिंग, रीयल–टाइम

लोकेशन डाटा, टोपोग्राफिक जानकारी, समुद्री मार्गों की सटीक स्थिति और मौसम संबंधी उन्नत सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। यह डेटा मिसाइल गाइडेंस, ड्रोन ऑपरेशन, नौसेना की रणनीति और वायु सेना की सटीक हमलावर क्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत की सीमाओं पर जटिल भूगोल, विशेषकर हिमालयी क्षेत्र, में बेकाके माध्यम से प्राप्त भू–स्थानिक डेटा सामरिक योजना को अधिक विश्वसनीय बनाता है। इस समझौते ने भारत की रक्षा तैयारी युद्ध क्षमता और रणनीतिक स्वायत्तता में महत्वपूर्ण बढ़ोतरी की है।जिससे यह चारों प्रमुख रक्षा समझौतों में अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है।

वैश्विक प्रभाव और निहितार्थ :–

भारत–अमेरिका संबंध एशिया में शक्ति संतुलन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। दोनों देश चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने के साझा उद्देश्य से रणनीतिक और रक्षा साझेदारी को निरंतर विस्तार दे रहे हैं। अमेरिका भारत को रक्षा तकनीक, हथियारों और आधुनिक सैन्य क्षमताओं के विकास में सहयोग देता है। हालांकि, भारत अपनी रणनीतिक स्वायत्तता के प्रति सजग रहता है और औपचारिक सैन्य गठबंधन के बजाय मुद्दा–आधारित सहयोग को प्राथमिकता देता है। भारत अपनी गुट–निरपेक्ष नीति को बरकरार रखते हुए अमेरिका, रूस और चीन सभी से संवाद बनाए रखता है। इस सहयोग का मुख्य लक्ष्य हिंद–प्रशांत क्षेत्र में स्वतंत्रता, सुरक्षा और शांति को बढ़ावा देना है, जिससे क्षेत्रीय स्थिरता कायम की जा सके। भारत और अमेरिका के बीच "वैश्विक दक्षिण" को लेकर वर्तमान संबंध बहुपक्षीय और सामरिक संतुलन का उदाहरण हैं। भारत एक ओर अमेरिका के साथ रक्षा, रणनीतिक साझेदारी, व्यापार, निवेश और तकनीकी सहयोग को लगातार सशक्त बना रहा है; तो दूसरी ओर, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका जैसे वैश्विक दक्षिणी देशों के साथ व्यापार, विकास और दक्षिण–दक्षिण सहयोग बढ़ा रहा है। दोनों देशों में एआई, साइबर सुरक्षा, स्वच्छ ऊर्जा और आतंकवाद विरोध जैसे क्षेत्रों में घनिष्ठ साझेदारी है। भारत वैश्विक मंचों पर दक्षिणी देशों को आत्मनिर्भर, सक्षम और सक्रिय भागीदार बनाने की कोशिश कर रहा है। भारत समावेशिता और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के समर्थन में वैश्विक दक्षिण की प्राथमिकता और नेतृत्व को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। यह भूमिका भारत की संतुलित और व्यापक विदेश नीति का प्रमाण है। जिससे वह अमेरिकी सहयोग के साथ–साथ वैश्विक दक्षिण का आगे बढ़ता प्रतिनिधि भी बना है। भारत और अमेरिका के बीच लोकतांत्रिक गठबंधन का शुद्धिकरण आज मजबूत रक्षा एवं रणनीतिक सहयोग में स्पष्ट दिखाई देता है। यह संबंध केवल औपचारिक समझौते से आगे बढ़कर साझा मूल्यों, गहरे विश्वास व तकनीकी नवाचार पर आधारित है। अमेरिका ने भारत को प्रमुख रक्षा साझेदार घोषित किया है। जिससे सैन्य तकनीक, हथियार, खुफिया और साइबर सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ा है। दोनों राष्ट्र हिंद–प्रशांत क्षेत्र की स्थिरता के लिए क्वाड जैसे मंचों पर संयुक्त सैन्य अभ्यास और रणनीतिक संवाद करते हैं। यह गठबंधन तकनीक, ऊर्जा, नवाचार और आर्थिक विकास तक विस्तृत है। हालांकि व्यापार, वीज़ा नीति और टेक्नोलॉजी ट्रांसफर जैसे कुछ मुद्दों पर चुनौतियाँ आती हैं, लेकिन दोनों देश संवाद और सहयोग से समाधान निकालने का प्रयास करते हैं। भविष्य में भारत–अमेरिका गठबंधन वैश्विक शक्ति संतुलन में निर्णायक भूमिका निभाने की क्षमता रखता है। भारत और अमेरिका के बीच तकनीकी बहुध्रुवीयता की साझेदारी आज वैश्विक राजनीति और आर्थिक विकास की दिशा तय कर रही है। दोनों देश आईसीईटी जैसे मंचों के जरिए सेमीकंडक्टर, क्वांटम कंप्यूटिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और दूरसंचार जैसी अत्याधुनिक तकनीकों में सहयोग को सशक्त बना रहे हैं। इस पहल का उद्देश्य रक्षा क्षेत्र में सहयोग को नए स्तर पर ले जाना, तकनीकी हस्तांतरण और संयुक्त नवाचार को बढ़ावा देना है। सामरिक दृष्टि से यह संबंध भारत को एक वैश्विक तकनीकी शक्ति के रूप में उभारने और चीन के प्रभाव को संतुलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत–अमेरिका द्विपक्षीय व्यापार मेंबढ़ावा 2030 तक $500 बिलियन का लक्ष्य तथा रक्षा उपकरणों का साझा विकास इसकी गहराई को दर्शाते हैं। हालाँकि राजनीतिक और प्रतिस्पर्धी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। लेकिन निरंतर संवाद और सहयोग इस साझेदारी को मजबूत बनाए रखते हैं। यह नवाचार बाजार विस्तार और आर्थिक प्रगति के नए अवसर खोलता है।

निष्कर्ष:

भारत–अमेरिका संबंध आज वैश्विक राजनीति में एक प्रमुख रणनीतिक साझेदारी के रूप में विकसित हुए हैं। 1947 में स्वतंत्रता के बाद भारत ने गुटनिरपेक्ष नीति अपनाई, जिससे शीत युद्ध काल में दोनों देशों के बीच दूरी रही। 1990 के दशक में भारत के आर्थिक सुधारों और शीत युद्ध की समाप्ति के बाद संबंधों में नई गति आई। 2005 के असैन्य परमाणु समझौते ने दोनों देशों के बीच विश्वास और सहयोग को मजबूत किया। 21वीं सदी में यह साझेदारी रक्षा, प्रौद्योगिकी, ऊर्जा और सुरक्षा क्षेत्रों में विस्तारित हुई है।

जीसोमिया, लेमोआ, कोमकासा और बेका जैसे समझौते भारत–अमेरिका रक्षा सहयोग के स्तंभ बने। साथ हीक्वाड, I2U2, जी20 और संयुक्त राष्ट्र जैसे बहुपक्षीय मंचों पर दोनों देशों का सहयोग वैश्विक स्थिरता और हिंद–प्रशांत क्षेत्र में संतुलन बनाए रखने में सहायक है। भारत अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए मुद्दा आधारित सहयोग की नीति पर चलता है। व्यापार वीजा और रूस नीति जैसे मतभेदों के बावजूद संवाद जारी है। तकनीकी, रक्षा और आर्थिक क्षेत्रों में गहरा सहयोग इस साझेदारी को भविष्य की वैश्विक व्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार बनाता है।

संदर्भ सूची :

1. Ministry of External Affairs, Government of India (2024). In India–US Relations Overview.
2. S. Department of State (2024). Fact Sheet on U.S.–India StrategicPartnership.
3. Pant, Harsh V. (2022). The US–India Partnership: Strategy Convergence and Global Governance. ORF Publications.
4. Tellis, Ashley J. (2020). India as a Leading Power. Carnegie Endowment for International Peace.
5. Rajagopalan, R. (2023). India and the Indo-Pacific Strategy. Observer Research Foundation.
6. G20 India Secretariat (2023). G20 New Delhi Leaders' Declaration.
7. Singh, Manjari Chatterjee (2021). Why India and the US Need Each Other. Brookings India.
8. Nye, Joseph S. (2011). The Future of Power. Public Affairs.